

प्रेस विज्ञप्ति

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा भेड़-बकरी पालन से होने वाली आजीविका के सुदृढ़ीकरण पर क्षेत्रीय कार्यशाला जयपुर में आयोजित
राजस्थान व गुजरात परिक्षेत्र में पशुपालन से जुड़े विभिन्न गैर सरकारी व सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने लिया भाग



बीकानेर, 23 मई। भेड़-बकरी पालन पश्चिमी भारत में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए एक सुदृढ़ आजीविका का साधन है। पूर्व में इनका पालन घरेलू जरूरतों के लिए होता था अब इसकी व्यापारिक जरूरतें बढ़ी हैं लेकिन इनके रेवड़ों की घटती संख्या चिंताजनक है। ये

विचार वेटरनरी विश्वविद्यालय और सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेन्स द्वारा शनिवार को राज्य के कृषि प्रबंधन संस्थान, दुर्गापुरा (जयपुर) में आयोजित कार्यशाला में वैज्ञानिकों द्वारा व्यक्त किये गए। भेड़-बकरी पालन से होने वाली आजीविका को सुदृढ़ करने के विषय पर राजस्थान और गुजरात (पश्चिमी क्षेत्र) में पशुपालन से जुड़े विभिन्न गैर सरकारी व सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के पशुपालन डेयरी और मत्स्य विभाग के संयुक्त सचिव श्री संजय भूषरेड्डी ने कहा देश के गरीब तबके के लिए छोटे जुगाली वाले पालतू पशुओं का पालन उनकी आजीविका का महत्वपूर्ण और आवश्यक हिस्सा है लेकिन दुर्भाग्यवश देश में बड़े पशुओं के पालन को ज्यादा महत्व दिया जाता है। भेड़-बकरी पालन के क्षेत्र में आ रही चुनौतियों से हम सब मिलजुल कर निपट सकते हैं। उन्होंने संभागियों का आह्वान किया कि वे इस ओर चिंतन कर सुझाव प्रस्तुत करें। कार्यशाला में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने अपने प्रमुख उद्बोधन में कहा कि राजस्थान में भेड़-बकरी बड़ी संख्या में हैं। देश में भेड़-बकरियों की कुल संख्या 20 करोड़ है जो कि देश में उपलब्ध कुल पशुधन संख्या का 39 फीसदी है। इसमें से राजस्थान में 15.35 प्रतिशत और गुजरात में 3.32 प्रतिशत भेड़-बकरी मौजूद



जन सम्पर्क प्रकोष्ठ



राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विष्वविद्यालय, बीकानेर

Phone: 0151-2543419 (O) 2549348 (Fax) E-mail: prcrajuvas@gmail.com

हैं और यह गांव और शहरों में लोगों की घरेलू जरूरतों को पूरा करने का एक प्रमुख जरिया है। राजस्थान में देश का एक तिहाई ऊन उत्पादन होता है। भेड़-बकरी के पालन को बड़े पैमाने पर अपनाए जाने के अच्छे परिणाम मिल सकते हैं अतः इसके विस्तार के लिए उचित वातावरण और प्रोत्साहन बहुत जरूरी है। राजस्थान सरकार के पशुपालन सचिव अश्विनी भगत ने कहा कि भेड़-बकरी पालन के लिए काम करने वाली सभी संस्थाओं और लोगों को भेड़-बकरी पालकों के लाभ के लिए समन्वित रूप में कार्य करने की जरूरत है। भेड़ व बकरियों के मांस उत्पादन में अब व्यावसायिक रुझान बढ़ रहा है परन्तु राज्य में विभाजित होते परिवारों में भेड़ व बकरियों के रेवड़ के आकार में कमी आ रही है अतः इनका घरेलू उपयोग ही हो पा रहा है। भेड़ व बकरियों के देशी नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण की महत्ती जरूरत है। कार्यशाला में इनके पालन के मुद्दे और चुनौतियों पर संभागियों ने अपने विचार रखते हुए बताया कि भेड़-बकरी के रेवड़ में श्रेष्ठ नस्लों के बकरों और मेंढों की कमी रहती है। भेड़-बकरियों की मृत्युदर में कमी लाई जाकर इनसे अधिकतम लाभ के लिए कार्य करने से ही अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। छोटे व सीमान्त भेड़ व बकरी पालकों को उन्नत तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी आजीविका को बढ़ाया जा सकता है। कार्यशाला में राज्य से भेड़ों और बकरियों के मांस उत्पादन हेतु निष्क्रमण पर रोक लगे और राज्य में मांस प्रसंस्करण ईकाइयों की स्थापना की आवश्यकता जताई गई। पशुपालन से जुड़े विभिन्न गैर सरकारी तथा सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला समन्वयक डॉ. उमेश अग्रवाल ने बताया कि इस कार्यशाला में गुजरात पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. ए.जे. के पटेल, राजस्थान सरकार के पशुपालन निदेशक डॉ. अजय गुप्ता, माइक्रोफाइनेन्स के यतेश यादव, टाटा ट्रस्ट के गणेश नीलम, एसएपीपीएलपीपी की टीम लीडर वर्षा मेहता शामिल हुए। प्रो. विष्णु शर्मा, अधिष्ठाता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

समन्वयक
जन सम्पर्क प्रकोष्ठ